



वृद्धों की समस्याएं, तथा उनके समाधान में सरकार की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन।

डॉ. असलमा प्रवीण

सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना महाविद्यालय, पटना

Email: aslama786parween@gmail.com

Corresponding Author- डॉ. असलमा प्रवीण

DOI- 10.5281/zenodo.8163648

प्रस्तावना :

वृद्ध सामान्यतः 60 वर्ष के लोगों को कहते हैं। कहते हैं कि वृद्धों की अनेक समस्याएं हैं जो शारीरिक और मानसिक तौर पर होती हैं, परन्तु अध्ययन करने पर पता चलता है कि इससे भी बड़ी कोई समस्याएं होती हैं जिन्हें हमें जानने समझने तथा उसको सुलझाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। वृद्धों की समस्याओं से सम्पूर्ण विश्व अवगत है, विकासशील देशों से अधिक यह वृद्धों की समस्याएं तो विकसित देशों में है। आधुनिक काल में कई संस्कृतियों में वृद्ध लोगों की “सांस्कृतिक स्थिति” में गिरावट आई है, जोन एरिकसन ने देखा कि “वृद्ध व्यक्तियों को अक्सर बहिष्कृत, उपेक्षित किया जाता है। कछ-कुछ वृद्ध तो घर तक छोड़ कर सरकार द्वारा बनाए वृद्धाश्रमों में जाकर रहने लगते हैं। सरकार ने भी वृद्धों की समस्याओं के समाधान को लेकर कई योजनाएं बनाई हैं और से वृद्धजन को लाभान्वित किया जा रहा है परन्तु यह कितना सार्थक है इसके अध्ययन से ही पता चल सकता है।

मुख्य शब्द : वृद्ध, बुजुर्ग, वरिष्ठ नागरिक, समाधान, उपेक्षा, एकाकिपन, समस्याएं, औद्योगिकरण, शहरीकरण

परिचय :

वृद्धावस्था का तात्पर्य मनुष्य की जीवन प्रत्याशा के निकट या उससे अधिक उम्र से है और इसे मानव जीवन का अंतिम चक्र भी कहते हैं। शब्द और व्यंजना में वृद्ध लोग बुजुर्ग (दुनिया भर में उपयोग किया जाने वाला शब्द, ओएपी (ब्रिटिश उपयोग जो वृद्धावस्था पेंशन भोगी के लिए खड़ा है) वरिष्ठ नागरिक (अमेरिकी उपयोग) बड़े व्यस्क (सामाजिक विज्ञान) शामिल हैं। और बुजुर्ग कई संस्कृतियों में आदिवासी लोगों की संस्कृतियों सहित।

वृद्धावस्था में जीवन के बाद का हिस्सा युवावस्था और मध्यम आयु के बाद जीवन की अवधि आमतौर पर गिरावट के संदर्भ में शामिल है। बुढ़ापा किस उम्र में शुरू होता है यह परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि यह संदर्भ के अनुसार भिन्न होता है। संयुक्त राष्ट्र इस बात पर सहमत हो गया है कि 65 से अधिक उम्र को वृद्धावस्था के रूप में दर्शाया जा सकता है और वृद्धावस्था की अंतरराष्ट्रीय परिभाषा पर यह पहला प्रयास है। हालांकी, अफ्रीका में वृद्धावस्था के अपने अध्ययन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने 55 वर्ष को वृद्धावस्था की शुरुआत के रूप में

निर्धारित किया साथ ही WHO ने माना कि विकासशील देश वृद्धावस्था को वर्षों से नहीं, बल्कि नई भूमिकाओं, पिछली भूमिकाओं के नुकसान या समाज में सक्रिय योगदान देने में असमर्थता से परिभाषित करती है। अकिधकांश विकसित पश्चिमी देशों ने सेवानिवृत्ति के लिए 60-65 वर्ष की आयु निर्धारित की है। वरिष्ठ सामाजिक कार्यक्रमों के लिए पात्र बनने के लिए आमतौर पर 60-65 की आयु होना एक आवश्यकता है।

उपसमूह परिभाषाएं :

जेरोन्टोलॉजिस्ट ने उन अलग स्थितियों को पहचाना है जो लोग अनुभव करते हैं। विकसित देशों में 60 और 70 के दशक की शुरुआत में अधिकांश लोग अभी भी फिट सक्रिय और अपनी देखभाल करने में सक्षम हैं। हालांकी 75 के बाद वे तेजी से कमजोर होते जाएंगे एक ऐसी स्थिति जो गंभीर मानसिक और शारीरिक दुर्बलता से चिन्हित होती है। इसलिए पुराने लोग के रूप में परिभाषित सभी लोगों को एक साथ जोड़ने के बजाय कुछ जेरोन्टोलॉजिस्टों ने उप समूहों को परिभाषित करके वृद्धावस्था की विविधता को मान्यता दी है। एक अध्ययन युवा बूढ़े (60-69) माध्यम बूढ़े (70-79) और बहुत पुराने (80+) को अलग करता है। एक

अन्य अध्ययन का उपसमूह यूवा बूढ़ा (65–74) मध्यम बूढ़ा (75–84) और पुराना 85+ है एक तीसरा उपसमूह है “युवा बूढ़ा” (65–74) “पुराना (74–84) और “पुराना 85+ उपसमूहों का वर्णन करने से महत्वपूर्ण जीवन परिवर्तनों का अधिक सटीक चित्रण होता है।

लक्षण :

वृद्धावस्था की विशिष्ट विशेषताएं शारीरिक और मानसिक दोनों हैं। वृद्धावस्था के चिन्ह मध्य आयु को चिन्हों से इतने भिन्न होते हैं कि कानूनी विद्वान् रिचर्ड पॉस्नर का सुझाव है कि वृद्धावस्था में एक व्यक्ति के संक्रमण के रूप में उन्हें अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में “समय साझाकरण” एक ही पहचान के रूप में माना जा सकता है। वृद्धावस्था की एक खास पहचान है जो शरीर और मन दोनों को प्रभावित करता है, वह है “व्यवहार की सुस्ती”।

वृद्धों की समस्याएँ :

आज भारत में वृद्धों की संख्या 7.6 करोड़ का अनुमान है। ऐसा अनुमान है कि 2030 तक यह जनसंख्या 19.8 करोड़ हो जाएगी। जहाँ तक बुढ़ों की समस्या भी बात की जाए तो यह कई प्रकार की होती है जिससे सबसे पहले तो शारीरिक समस्याएँ आती है, फिर धीरे-धीरे उनको मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परिवार के सदस्यों द्वारा की जाने वाली उपेक्षा वृद्धजनों की अन्य समस्याओं को कई गुना बढ़ा देती है। अपने सभी होते हुए भी वृद्धों को एकाकीपन का शिकार होना पड़ता है। वृद्ध महिला और पुरुष दोनों के साथ ही यही मामला पेश आता है परंतु जो महिलाएँ घर के काम-काज में अपने आप को व्यस्त रखती हैं उनकी तो परिजन देखरेख करते हैं परन्तु वृद्ध पुरुषों की परिवार में कोई विशेष भूमिका न होने के कारण उनकी उपेक्षा की जाती है। इस प्रकार वृद्धों को आर्थिक समस्या के कारण अपने परिवार पर निर्भर होना पड़ता है जिसके कारण उनकी उपेक्षा होती रहती है। कई ऐसे भी वृद्ध होते हैं जिन्हें हम काम करते देख सकते हैं जैसे की सब्जि लाना या प्रतिदिन घर में इस्तेमाल होने वाली वस्तु लाना बच्चों को स्कूल पहुँचाना-लाना इत्यादि जबकि उनकी उम्र यह सब करने की नहीं होती है फिर भी वह करते हैं ताकि परिवार के उपर वह बोझ न बन जाए। यह भी स्वास्थ्य पर निर्भर करता है अगर कोई वृद्ध शारीरिक समस्याओं का शिकार हो जाए या यूँ कहे कि वृद्धावस्था में शारीरिक समस्या होना तो बेहद आम बात है, तो ऐसे वृद्ध न चाहते हुए भी परिवार पर बोझ बन जाते हैं, कुछ परिवार तो देखरेख करते हैं परंतु कुछ तो पूरा पलट जाते हैं। मैंने

खुद कई परिवार के बूढ़ापे में देखा है कि उसका बेटा अपने माता-पिता के सेवा करता है और बहु इस सेवा से अपना पलड़ा झाड़ लेती है।

शारीरिक समस्याएँ :

1. हड्डी और जोड़। पुरानी हड्डियों को पतला और सिकुड़न” द्वारा चिह्नित किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप 80 वर्ष की आयु तक ऊँचाई में कमी (लगभग 2 ईंच 5 cm), कई लोगों में एक झुकी हुई मुद्रा और हड्डी और जोड़ों के रोगों जैसे कि ऑस्टियो आर्थराइटिस और ऑस्टियोपोरोसिस के लिए अधिक संवेदनशील हो सकता है।
2. क्रोनिक म्यूकस हाइपर सेरेटियन (सीएमएच) “खांसी के रूप में परिभाषित और थूक को उपर लाना..... बुजुर्ग व्यक्तियों में एक सामान्य श्वसन लक्षण है।
3. दांतों की समस्या। वृद्धावस्था में कम लार और मौखित स्वच्छता की क्षमता कम हो सकती है जिससे दांतों की सड़न और संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।
4. पाचन तंत्र। लगभग 40 प्रतिशत समय, वृद्धावस्था में पाचन संबंधी विकार जैसे कि निगलने में कठिनाई पर्याप्त खाने में असमर्थता और पोषण, कब्ज और रक्तस्त्राव को अवशोषित करने में असमर्थता होती है।
5. एसेशियल कंपकंपी (ईटी) ऊपरी शरीर के हिस्से में एक बेकाबू कंपन है। यह बुजुर्गों में अधिक आम है और उम्र के साथ लक्षण बिगड़ते जाते हैं।
6. दृष्टि। प्रेसबायोपिया 50 साल की उम्र तक हो सकता है और यह विशेष रूप से कम रोशनी में छोटे प्रिंट को पढ़ने में बाधा उत्पन्न करता है।
7. जलप्रापात। वृद्धावस्था में गिरने से चोट लगने का जोखिम होता है जिससे किसी युवा व्यक्ति को चोट नहीं लग सकती।
8. चाल परिवर्तन। चाल के कुछ पहलू सामान्य रूप से वृद्धावस्था के साथ बदलते हैं। 70 साल की उम्र के बाद चाल की गति धीमी हो जाती है।
9. बाल आमतौर पर भूरे/सफेद हो जाते हैं और पतले भी हो सकते हैं। कई पुरुष गंजेपन से प्रभावित होते हैं, और महिलाएँ रजोनिवृत्ति में प्रवेश करती हैं।
10. प्रतिरक्षा कार्य। कम कुशल प्रतिरक्षा कार्य (इम्यूनोसेनेसेंस) वृद्धावस्था का प्रतीक है।
11. फेफड़े कम अच्छी तरह से फैल सकते हैं, इस प्रकार वे कम ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

12. नींद की समस्या वृद्धावस्था में 50 प्रतिशत से अधिक की पुरानी व्यापकता रखती है और इसके परिणामस्वरूप दिन में नींद आती है। 65 वर्ष की आयु तक, गहरी नींद लगभग 5 प्रतिशत तक कम हो जाती है।
13. स्वाद कलिकाएं कम हो जाती हैं जिससे कि 80 वर्ष की आयु तक स्वाद कलिकाएं सामान्य से 50 प्रतिशत कम हो जाती हैं। भोजन कम आकर्षक हो जाता है और पोषण प्रभावित हो सकता है।
14. 85 वर्ष की आयु में प्यास की धारणा कम हो जाती है जैसे कि 41 प्रतिशत बुजुर्ग अपर्याप्त रूप से पीते हैं।
15. आवाज | वृद्धावस्था में वोकल कोर्ड कमजोर हो जाते हैं और अधिक धीरे-धीरे कंपन करते हैं। इसका परिणाम कमजोर सांस लेने वाली आवाज में होता है जिसे बूढ़े व्यक्ति की आवाज कहा जाता है।

मानसिक समस्याएं :

वृद्धावस्था के मानसिक चिन्हों में निम्नलिखित शामिल है—

1. अनुकूलनीय अधिकांश लोगों को उनके बूढ़ापे में वर्णित करता है। वृद्धावस्था को तनावपूर्णतः के बावजूद उन्हें “सहमत” ओर “स्वीकार करने” के रूप में वर्णित किया गया है। हालांकि वृद्धावस्था निर्भरता अल्पमत में अक्षमता और बेकार की भावनाओं को प्रेरित करती है।
2. उदास मन। कॉक्स, अब्रामसन, डिवाइन और होलोन के अनुसार, बूढ़ापा पूर्वाग्रह के कारण होने वाले अवसाद के लिए एक जोखिम कारक है। जब लोग बुजुर्गों के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं और फिर खुद बूढ़े हो जाते हैं, तो उनका बुजुर्ग विरोधी पूर्वाग्रह अंदर की ओर मुड़ जाता है जिससे अवसाद होता है। “अधिक नकारात्मक उम्र के रूढ़िवादी वाले लोगों में उम्र बढ़ने के साथ अवसाद की उच्च दर होने की संभावना होगी। अवसाद के परिणामस्वरूप 65 से अधिक आबादी में आत्महत्या की दर सबसे अधिक होती है।
3. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमानों के अनुसार 60+ आयु वर्ग के लगभग 15 प्रतिशत लोगों में मानसिक विकार पीड़ित हैं। 15 देशों में किए गए अन्य सर्वेक्षण में बताया गया है कि व्यस्कों में मानसिक विकार शारीरिक समस्याओं से ज्यादा उनके दैनिक गतिविधियों में हस्तक्षेप करते हैं।
4. कम मानसिक और संज्ञानात्मक क्षमता बूढ़ापे को प्रभावित करती है। वृद्धावस्था में स्मृति

हानि एक आम बात है, क्योंकि सूचनाओं को एन्कोट, संग्रहीत और पुनर्प्राप्त करने की गति में कमी आती है। मनोभ्रंश स्मृति हानि और अन्य बौद्धिक क्षमताओं के लिए एक सामान्य शब्द है जो दैनिक जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए पर्याप्त गंभीर है। वृद्धावस्था में इसका प्रसार 65 वर्ष की आयु में लगभग 10 प्रतिशत से बढ़कर 85 वर्ष की आयु में लगभग 50 प्रतिशत हो जाता है। डिमेंशिया के लगभग 50-80 प्रतिशत मामलों में अल्जाइमर रोग होता है। मनोभ्रंश व्यवहार में भटकना, शारीरिक आक्रामकता, मौखिक विस्फोट, अवसाद और मनोविकृति शामिल हो सकते हैं।

आर्थिक समस्याएं :

वृद्धावस्था में व्यक्ति की शारीरिक क्षमताओं का ह्रास के कारण वे स्वयं आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हो पाते हैं। ऐसे में उनके सामने तमाम प्रकार की आर्थिक समस्याएं सर उठाने लगती हैं। वे पहले जैसे उत्पादक न होने के कारण अपना जीवन यापन स्वयं नहीं कर पाते और प्रौढ़ावस्था में प्राप्त होनेवाले पूँजी का उपयोग बच्चों के पालन पोषण में खर्च कर चूके होते हैं। इसी समय में वे अपनी पूँजी में से कुछ अपनी वृद्धावस्था के लिए बचाए रखते हैं तो ऐसे वृद्धों के सामने आर्थिक समस्या कम ही आती है। ऐसे समय में जब वे अनुत्पादक हो चूके हैं उनके बच्चे एक स्पर्धा का हिस्सा है जिसमें आगे बढ़ने के लिए लगातार आर्थिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है। तब वे अपने माता-पिता को बोझ समझने लगते हैं उनकी हर जरूरत बेकार के खर्च में जोड़ देते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था में बच्चों पर आश्रित होकर रह जाते हैं।

कई बार देखा गया है कि जिन वृद्धों के पास धन संपत्ति है, तो उनकी देखभाल उनके बच्चे अच्छे से करते हैं। साथ में यह भी देखा गया है कि माता-पिता की धन संपत्ति हथियाने के लिए उनके साथ गलत व्यवहार करके उनके बच्चे हुए जीवन को नरक बना दिया जाता है। जिससे हताश होकर कई वृद्ध अपने धरों को छोड़कर वृद्धाश्रम चले जाते हैं। दूसरी तरफ ऐसे कई सारे मामले दिखाई देते हैं जिसमें वित्तीय कमी के कारण स्वास्थ्य सेवाओं से उन्हें वंचित रहना पड़ता है। वृद्धावस्था आर्थिक रूप से अनुपादत्कता की अवस्था होने के कारण किसी भी प्रकार की बाहरी आर्थिक सहायता को प्राप्त करने में वृद्ध असमर्थ होता है।

पारिवारिक उपेक्षा :

भारत के केरल, तमिलनाडू महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, पंजाब और हिमाचल प्रदेश

में हेल्पएज, इंडिया द्वारा किए अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि कई राज्यों में कुल वृद्धों की जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत अकेले ही जीवनयापन कर रहा है पिछले दो दशकों में इस अनुपात में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। इसमें भी महिलाओं के मामले में यह वृद्धि अधिक पाई गई है।

वृद्धावस्था ऐसी अवस्था मानी जाती रही है कि जिसमें ग्रस्त एवं उपेक्षित उन बुजुर्गों की सहायता करती है जो आर्थिक रूप से कमजोर है, विकलांग हैं इत्यादि।

वृद्धों की समस्याओं का समाधान करने में सरकार की भूमिका (Role of Government for solution of the Problem of Elderly) :

वृद्धों की समस्याओं को हल करने की दिशा में कई कारगर कदम उठाए गए जो निम्नलिखित हैं—

1. वृद्धावस्था पेंशन योजना : यह वृद्धों को दी जा रही सुविधाओं में सबसे प्रमुख है। यह योजना ऐसे वृद्धजनों के लिए है जो बेसहारा और आर्थिक रूप से कमजोर हैं, जिनकी आमदनी का कोई नियमित स्रोत नहीं होता है। इस योजना के अन्तर्गत 75 रुपये मासिक की पेंशन दी जाती है जो अभि की महँगाई के हिसाब से काफी कम है फिर भी इसका लाभ प्रत्येक राज्य के कई लाख वृद्ध उठा रहे हैं।
2. राज्यों में वृद्धावस्था पेंशन योजना : अनेक राज्यों की सरकारें इस वृद्धावस्था पेंशन योजना को अपने यहाँ चला रही हैं। इसके अंतर्गत केंद्र सरकार से पेंशन नहीं मिलने वाले बुजुर्गों को पेंशन दी जाती है। इस पेंशन की राशि बिहार में 60 रुपये है जबकि राजस्थान में 300 रुपया है।
3. बेसहारों के लिए अन्नपूर्णा योजना : इसके अन्तर्गत प्रतिमाह दस किलो खाद्यान्न दिया जाता है, यह खाद्यान्न उन बुजुर्गों के लिए पर्याप्त होता है कि नहीं। यह शोध का विषय है।
4. आयकर छूट : आयकर अधिनियम में बुजुर्ग लोगों को रियायत दी जाती है।
5. जीवन बीमा सूविधायें : अपनी बचत योजनाओं के माध्यम से भारतीय जीवन बीमा निगम वरिष्ठ नागरिकों के कई प्रकार की सुविधायें उपलब्ध कराता है। इसमें सभी स्वीकृत बैंकों द्वारा 60 वर्ष से अधिक के वृद्धों को 0.75 प्रतिशत अधिक ब्याज दिया जाता है।
6. सिनियर सिटिजन छूट : इस योजना में रेल किराया में 25 प्रतिशत छूट का प्रावधान है 60 वर्ष से अधिक आयु वाले वृद्धों के इन कारगर कदम के अलावा भी कई प्रयास हैं—

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार भारत में सामाजिक न्याय मंत्रालय द्वारा 1992 में वृद्धों की सहायता देने का एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जिसके अन्तर्गत डे केयर सेंटर, वृद्धावस्था गृह वृद्धजन देखरेख केन्द्र तथा सचल चिकित्सालय स्थापित किए जा चुके हैं। वर्ष 2007–2008 के अनुमानित आँकड़ों (सरकारी, गैर सरकारी) के आधार पर वृद्धाश्रमों की संख्या 1000 से अधिक है। वर्ष 2007–2008 के बजट में वृद्धाश्रमों के निर्माण हेतु सरकार द्वारा 1 करोड़ रुपये की धनराशि प्रदान करने का प्रावधान रखा गया है। 31 दिसम्बर 2009 तक भारत सरकार द्वारा वृद्धों की सहायता के लिए 282 गैर सरकारी संस्थाओं को 9.30 करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता दी जा चुकी है।

वृद्धों की समस्याओं का समाधान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका (Role of Non-Government Organization for Solution of the problem of elderly) :

वृद्धों की समस्याओं का समाधान करने में गैर सरकारी संगठनों की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। देश में कई ऐसे गैर सरकारी संगठन हैं जो बुजुर्गों के कल्याण की दृष्टि से कार्य कर रहे हैं। ये संगठन ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों में अपनी सेवाएं प्रदान करते हैं।

वृद्धों को प्रमुखतः तीन क्षेत्रों में आवश्यकता पड़ती है।

1. वित्तीय सुरक्षा
2. स्वास्थ्य सुरक्षा
3. भावनात्मक सुरक्षा

गैर सरकारी संगठन अपनी विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से बुजुर्गों को वित्तीय सुरक्षा (Financial Security) प्रदान करने की पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं। ये संगठन बुजुर्गों को उनकी शारीरिक शक्ति के अनुसार छोटे-छोटे कार्यों से लगाकर उनकी आय को बढ़ाने में सहायता कर देते हैं।

वृद्धजनों को कई प्रकार की बिमारियों जो कि साधारण भी हो सकती है और खतरनाक भी की सम्भावना बनी रहती है। वर्ष 2000 तक सबके लिए स्वास्थ्य सूविधाओं के लक्ष्य प्राप्त करने की बात कही गयी थी, किंतु यह लक्ष्य पूरा होता हुआ दिखाई नहीं दे रहा है।

हाल के वर्षों में एकांकी परिवार के बढ़ते प्रचलन के कारण परिवार के पुराने तथा अमीर सदस्य भी मनोवैज्ञानिक, शारीरिक और वित्तीय असुरक्षा के शिकार हो गए हैं। राजू एस एस (2011) ने उम्र बढ़ने पर शोध पर ध्यान केन्द्रित किया है। जिसमें उन्होंने उम्र बढ़ने पर स्थिति और

शारीरिक स्थिति में आने वाले बदलाव और उसके कारण होने वाले समस्याओं को उजागर किया है। यूनाइटेड किंगडम के भीतर, स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल नीति ने वृद्ध लोगों के लिए सेवाओं के एकीकरण को बढ़ावा दिया है और विभिन्न देशों ने अलग-अलग तरीकों से इस एजेंडे पर प्रतिक्रिया दी है। उदाहरणस्वरूप उत्तरी आयरलैंड को स्वास्थ्य और सामाजिक देखभाल के एकीकरण के लिए एक मॉडल के रूप में रखा गया है।

एक अखिल यूरोपीय पहल (EPIC) ने वृद्धों के लिए एक प्रणाली को विकसित किया जिसका उद्देश्य एकीकृत देखभाल के लिए प्रोटोटाइप सूचना प्रणाली होना था। इस परियोजना का एक पहलू एक मूल्यांकन उपकरण का विकास था, जिसमें वृद्ध लोगों के बहु अनुशासनात्मक मूल्यांकन की सभी विशेषताओं को एक उपकरण में शामिल किया गया था।

मरीन सोजबर्ग, एके एडबर्ग, बीएच रासमुसेन, इंगेला बेकी (बीएमसी प्रशामक देखभाल 20 (1), 1-12 -2021) : उपशामक देखभाल एक समग्र दृष्टिकोण से जीवन के लिए खतरनाक बीमारियों से जुड़ी समस्याओं का सामना करने वालों की जरूरतों की पहचान करने पर केंद्रित है। जैसे-जैसे वृद्ध लोग अपने जीवन के अंत की ओर बढ़ते हैं, वे समस्याओं की एक जटिल श्रृंखला का अनुभव कर सकते हैं, जिन्हें स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों को अपने रोगियों के रिकॉर्ड में पहचानना और उनका दस्तावेजीकरण करना चाहिए। इस प्रकार उच्च गुणवत्ता वाली रोगी देखभाल सुनिश्चित करने के लिए दस्तावेजीकरण महत्वपूर्ण है।

एलेसेंड्रा मारेंगोनी, सारा एंगलमैन, रेनेमेलिंस, फ्रांसेस्का मांगियालाशे, अनीता कार्प, अन्निका गारमेन, बेटिना मेनो लारा फ्रेटिग्लिओनी एजिंग अनुसंधान समीक्षाएँ 10(4), 430-439, 2011 : बुजुर्गों में बहुरूगणता (कई पुरानी बीमारियों का सह-अस्तित्व) की घटना, कारणों और परिणामों के साथ-साथ बहु-रूगणता वाले व्यक्तियों के देखभाल के मॉडल और गुणवत्ता से संबंधित मौजूदा वैज्ञानिक प्रमाणों को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए वृद्ध व्यक्तियों में बहुत रूगणता का प्रसार 55-98 प्रतिशत के बीच होता है। क्रॉस सेक्शनल अध्ययनों में, वृद्धावस्था, महिला लिंग, और निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति बहु-रूगणता से जुड़े कारक हैं, जिसकी पुष्टि अनुदैर्घ्य अध्ययनों से भी होती है। बहु-रूगणता के प्रमुख परिणाम विकलांगता और कार्यात्मक गिरावट, जीवन की खराब गुणवत्ता और उच्च स्वास्थ्य देखभाल लागत हैं।

इतिहास में वृद्धावस्था के अपने सर्वेक्षण के आधार पर, जॉर्जेस मिनोइस ने निष्कर्ष निकाला है, कि यह स्पष्ट है कि हमेशा और हर जगह युवाओं को वृद्धावस्था में प्राथमिकता दी गई है।" पश्चिमी विचार में "बुढ़ापा एक बुराई, एक दुर्बलता और मृत्यु की तैयारी का एक नीरस समय है। "इसके अलावा, मृत्यु को अक्सर "गिरावट" से अधिक पसंद किया जाता है।

आधुनिक काल में, कई संस्कृतियों में वृद्ध लोगों की "सांस्कृतिक स्थिति" में गिरावट आई है। जोन एरिकसन ने देखा कि "वृद्ध व्यक्तियों को अक्सर बहिष्कृत, उपेक्षित किया जाता है ; बुजुर्गों को अब ज्ञान के वाहक के रूप में नहीं बल्कि शर्म के अवतार के रूप में देखा जाता है।

उम्र से संबंधित दृष्टिकोणों पर शोध लगातार यह पाता है कि नकारात्मक दृष्टिकोण वृद्ध लोगों के प्रति उनके रूप और व्यवहार के कारण सकारात्मक दृष्टिकोण से अधिक है। अपने अध्ययन एजिंग एंड ओल्ड एज में पॉस्नर ने अमेरिकी समाज में "वृद्ध लोगों की नाराजगी और तिरस्कार की खोज की।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी का निहित-एसोसिएशन टेस्ट यंग बनाम ओल्ड के बारे में निहित "रवैया और विश्वास" को मापता है। ब्लाइंड स्पॉट : हिडन बायसेज ऑफ गुड पीपल, परीक्षण के बारे में एक किताब, रिपोर्ट करती है कि 80 प्रतिशत अमेरिकियों की युवाओं से अधिक उम्र के लिए स्वाचालित प्राथमिकता" है। आयुवाद के दस्तावेज हैं कि अमेरिकियों के पास आमतौर पर "वृद्ध व्यक्तियों के लिए थोड़ी सहनशीलता और उनके बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण रखने के बारे में बहुत कम आरक्षण हैं

सिमोन डी बेउवोइर ने लिखा है कि "अनुभव का एक रूप है जो केवल पुराने लोगों से संबंधित है- वह स्वयं वृद्धावस्था का है। फिर भी वृद्धावस्था के अनुकरण युवा लोग को कुछ समझ हासिल करने में मदद करने का प्रयास करते दुनिया भर में वृद्ध लोगों की संख्या मुख्य रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद के बच्चों में उछाल और स्वास्थ्य देखभाल के प्रावधान और मानकों में वृद्धि के कारण बढ़ रही है। 2050 तक विकसित दुनिया की 33 प्रतिशत आबादी और कम विकसित दुनिया की लगभग 20 प्रतिशत आबादी 60 साल से अधिक उम्र की होगी।

निष्कर्ष :

वृद्धावस्था मनुष्य की जीवन का अंतिम पड़ाव है जहाँ आकर मनुष्य के जीवन का वह क्षण एक ऐसे अनुभव को हासिल करता है जो उसे उसके बच्चों से प्राप्त होना शुरू होता है। यह कुछ

अजीब लग रहा है सुनने में परंतु यह एक कड़वा सच है। जो माँ-बाप अपने बच्चों को पाल-पोष कर बड़ा कर देते हैं, वहीं बच्चे बड़े होकर आधुनिकता के नाम पर माँ-बाप को सिखाने लगते हैं। दुख तब होता है जब बच्चे उनके अनुभव और विचारों को पुराने जमाने का कह देते हैं और उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

आज युवा वर्ग/पीढ़ी और समाज व्यवस्था के बीच एक बड़ा भारी अन्तर आ गया है। आधुनिक युग में सामाजिक संरचना में होने वाला तीव्र परिवर्तन है। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी तो अपने मूल्यों को सरलता से बदल लेते हैं जबकि पुरानी पीढ़ी अपने मूल्यों को नहीं छोड़ पाती। अनुभव का एक रूप है जो केवल पुराने लोगों से संबंधित है वह स्वयं वृद्धावस्था का है। फिर भी वृद्धावस्था के अनुकरण युवा लोगों को कुछ समझ हासिल करने में मदद करने का प्रयास करते हैं।

सन्दर्भ (References) :

1. दृष्टि IAS : भारतीय वृद्धजनों की जरूरतें एवं नवीन सरकारी पहल 08 जून, 2017
2. "वृद्ध व्यक्तियों के मानवाधिकार" ओ एचसी. एच आर, ओ. आर जी। मानवाधिकार के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त का कार्यालय।

3. ए.बी. "डब्लूएचओ। एक वृद्ध या बुजुर्ग व्यक्ति की परिभाषा। विश्व स्वास्थ्य संगठन 20165-04-09 को लिया गया।
4. अमेरिकन साइकोलॉजिकल/एसोसिएशन का प्रकाशन, मैनुअल छटा संस्करण (अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, 2009) ISBN 1433805618
5. अग्रवाल गोपाल कृष्ण (2015) समाजशास्त्र SBPD पब्लिशिंग हाउस।
6. वृद्ध महिलाओं के प्रति उपेक्षा दुर्व्यवहार और हिंसा (2013) आर्थिक विभाग ओर सामाजिक मामले संयुक्त राष्ट्र।
7. अग्रवाल गिरीराज शरण (2004) वृद्धावस्था की कहानियाँ प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 115-116
8. शिंधाल विनीता (2014) वृद्धावस्था : नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली, पृष्ठ 45-47
9. उम्र बढ़ने की जनसांख्यिकी" ट्रांसजेनरेशनल आर्ग, 2016.04.04 को लिया गया।
10. कुलकर्णी पी एम। भारत में जन सांख्यिकीय संक्रमण। सी एस-आर डी. एस. एस. एस., जेएन विश्वविद्यालय। 2014 (आखिरीबार 2015 जून को उद्धृत) से उपलब्ध।

<http://www.consusindia.gov.in/2011>
Census/Presentation/Demographic-
Translation-in India.pdf